INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

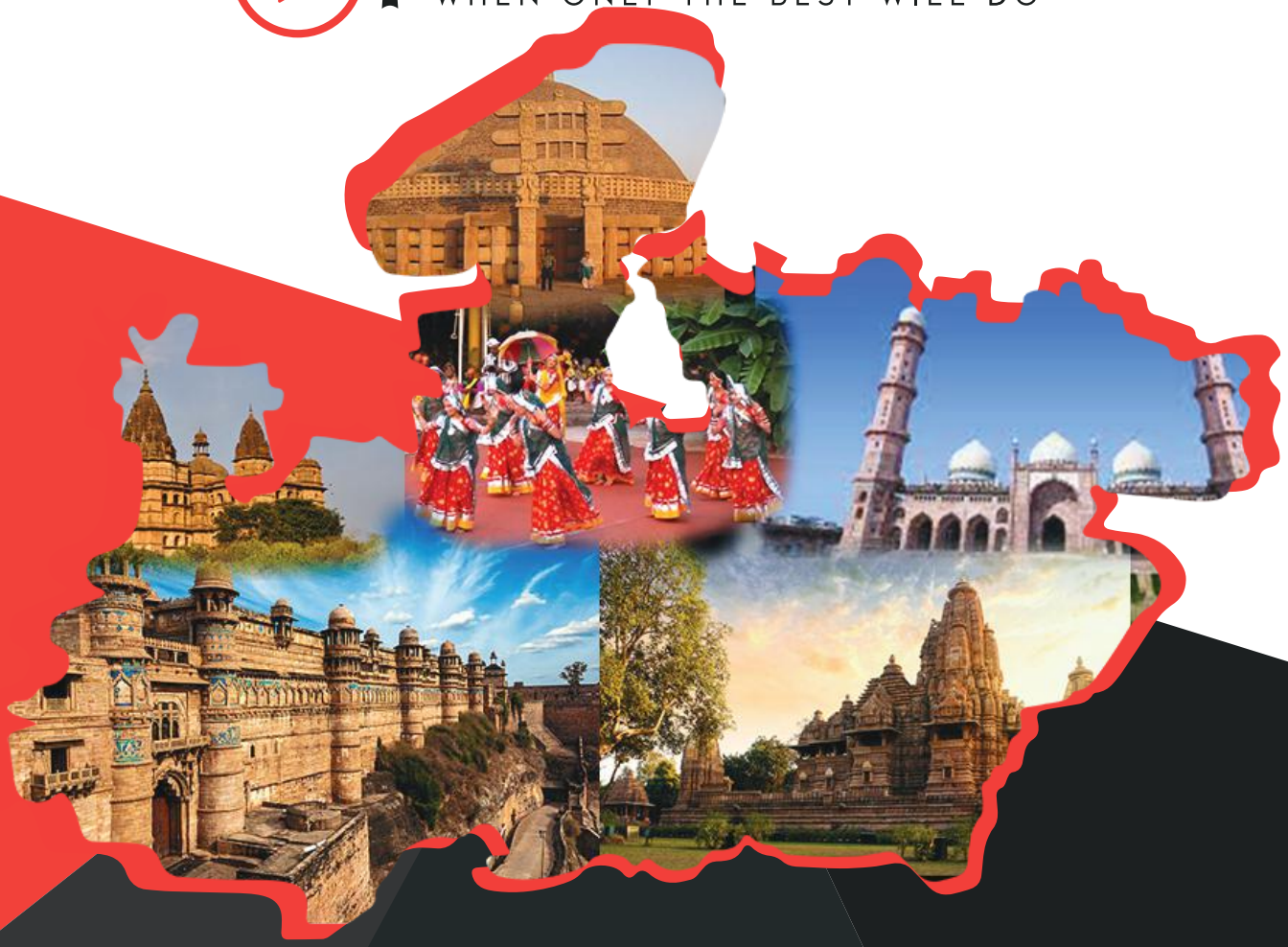

MPPSC-PCS

MADHYA PRADESH PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

भाग -8 सामान्य हिंदी एवं व्याकरण

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 8

सामान्य हिंदी एवं व्याकरण

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम (2023)**

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	अलंकार	1-3
2.	अनुवाद	3-11
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	12-26
4.	समास एवं समास – विग्रह	27-45
5.	विराम-चिह्न	46-48
6.	पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	49-67
7.	मुहावरे	68-75
8.	लोकोक्तियाँ एवं कहावतें	75-82
9.	विलोम शब्द	83-93
10.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	98-100
11.	तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज	101-109
12.	पर्यायवाची शब्द	110-123
13.	मानक शब्दावली	123-124
14.	अपठित गद्यांश	124-138
15.	पल्लवन	140-144
16.	संक्षिप्तीकरण	144-148

हिंदी

अध्याय – I

अलंकार

- अलंकार शब्द 'अलम~' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आभूषण' । जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूषणों से शरीर को शोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य – अलंकारों से काव्य की ।

  साफ शब्दों में जिस प्रकार स्त्रियाँ श्रंगार कर और भी शोभायमान हो जाती है, उसी प्रकार अलंकार से कविता और भी सौंदर्यवती हो जाती है ।
- संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में 'काव्य शोभाकरान~ धर्मान अलंकाराज~ प्रचक्षते' – काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं ।
- हिंदी के कवि केशवदास एक अलंकारवादी कवि हैं ।

अलंकार का प्रकार

अलंकार के तीन प्रकार हैं-

(A) **शब्दालंकार** – शब्द पर आश्रित अलंकार

(B) **अर्थालंकार** – अर्थ पर आश्रित अलंकार

(C) **आधुनिक / पाश्चात्य अलंकार** – आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य से आए अलंकार

(A) **शब्दालंकार** –

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं-अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास और वीप्सा आदि।

I. अनुप्रास अलंकार

एक या अनेक वर्गों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति को 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं-

(i) छेकानुप्रास अलंकार

जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे-

"इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती"

यहाँ करुणा कलित में छेकानुप्रास है।

(ii) वृत्यानुप्रास अलंकार

काव्य में पाँच वृत्तियाँ होती हैं-मधुरा, ललिता, प्रौढ़ा, परुषा और भद्रा। कुछ विद्वानों ने तीन वृत्तियों को ही मान्यता दी है-उपनागरिका, परुषा और कोमला। इन वृत्तियों के अनुकूल वर्ण साम्य को वृत्यानुप्रास कहते हैं ।

जैसे-

'कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि'

यहाँ पर 'न' की आवृत्ति पाँच बार हुई है और कोमला या मधुरा वृत्ति का पोषण हुआ है। अतः यहाँ वृत्यानुप्रास है।

(iii) श्रुत्यनुप्रास अलंकार

जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्षों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे-

तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई

यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य) से उच्चरित होने। वाले वर्षों की कई बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार

जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर"।

यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अतः अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

(v) लाटानुप्रास अलंकार

जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

"पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?

पूत कपूत, तो क्यों धन संचय"?

यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ, है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अतः यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है;

जैसे-

"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

जैसे –

"कनक – कनक ते सौंगुनी, मादकता अधिकाय"

वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय" ।।

कनक शब्द की एक बार आवृति । सोना 2. धतूरा

3. श्लेष अलंकार

एक शब्द में एक से अधिक अर्थ जुड़े हों (जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ अलग-अलग हो वहां श्लेष अलंकार होता है ।

जैसे-

"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं—'कान्ति', 'आत्मसम्मान' और 'जल', अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

(B)अर्थालंकार

साहित्य में अर्थगत चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं। प्रमुख अर्थालंकार मुख्य रुप से तेरह हैं-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, सन्देह, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति, विभावना, अन्योक्ति, विरोधाभास, विशेषोक्ति, प्रतीप, अर्थान्तरन्यास आदि।

1. उपमा

समान धर्म के आधार पर जहाँ एक वस्तु की समानता या तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा के चार अंग हैं ।

1. उपमेय वर्णनीय वस्तु जिसकी उपमा या समानता दी जाती है, उसे 'उपमेय 'कहते हैं; जैसे-उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। वाक्य में 'मुख ' की चन्द्रमा से समानता बताई गई है, अत :मुख उपमेय है।
2. उपमान जिससे उपमेय की समानता या तुलना की जाती है उसे उपमान कहते हैं । जैसे-उपमेय)मुख (की सम समानता चन्द्रमा से की गई है, अतः चन्द्रमा उपमान है।
3. साधारण धर्म जिस गुण के लिए उपमा दी जाती है, उसे साधारण धर्म कहते हैं। उक्त उदाहरण में सुन्दरता के लिए उपमा दी गई है, अत सुन्दरता साधारण धर्म है।
4. वाचक शब्द जिस शब्द के द्वारा उपमा दी जाती है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में समान शब्द वाचक है। इसके अलावा 'सी', 'सम', 'सरिस 'सदृश शब्द उपमा के वाचक होते हैं। उपमा के तीन भेद हैं-पूर्णोपमा, लुप्तोपमा और मालोपमा।

(क) पूर्णोपमा जहाँ उपमा के चारों अंग विद्यमान हों वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है ।

जैसे-

हरिपद कोमल कमल से"

(ख) लुप्तोपमा जिसमें उपमा के एक, दो या तीन अंग लुप्त (गायब)हो लुप्तोपमा अलंकार होता है ।

जैसे-

"पड़ी थी बिजली-सी विकराल।

लपेटे थे घन जैसे बाल"।

(ग) मालोपमा जहाँ किसी कथन में एक ही उपमेय के अनेक उपमान होते हैं वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।

जैसे-

"चन्द्रमा-सा कान्तिमय, मृदु कमल-सा कोमल महा

कुसुम-सा हँसता हुआ, प्राणेश्वरी का मुख रहा।।"

अध्याय – 3

संधि एवं संधि विच्छेद

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं अर्थात्त् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद
(च्)

3. लोप – अतः+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मनः+कामना = मनःकामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती हैं :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल 11 स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा.

अ/आ +अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(1).अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी

अंध + अनुगामी = अंधानुगामी

अधिक + अंश = अधिकांश

अधिक + अधिक = अधिकाधिक

अस्त + अचल = अस्ताचल

आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार

उदय + अचल = उदयाचल

उप + अध्याय = उपाध्याय

उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर

ऊह + अपोह = ऊहापोह

काम + अयनी = कामायनी

गत + अनुगतिक = गतानुगतिक

गीत + अंजलि = गीतांजलि

छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

जठर + अग्नि = जठराग्नि

जन + अर्दन = जनार्दन

तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेष्ण

तीर्थ + अटन = तीर्थाटन

दाव + अनल = दावानल

दीप + अवली = दीपावली

दाव + अग्नि = दावाग्नि

देश + अंतर = देशांतर

न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

पद + अवनत = पदावनत

पर + अधीन = पराधीन

प्र + अंगन = प्रांगण

प्र + अर्थी = प्रार्थी

भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय

गर्भ + आधान = गर्भाधान

अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

गर्भ + आशय = गर्भाशय

आर्य + आवर्त = आर्यावर्त

फल + आहार = फलाहार

कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

छात्र +आवास = छात्रावास

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना +देश =जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

विरह + आतुर = विरहातुर

विवाद + आस्पद = विवादास्पद

शत + आयु = शतायु

शाक + आहारी = शाकाहारी

शोक + आतुर = शोकातुर

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

सिंह + आसन = सिंहासन

स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

हिम + आलय = हिमालय

जल + आशय = जलाशय

पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

तथा + अपि = तथापि

रचना + अवली = रचनावली

दीक्षा + अंत = दीक्षांत

विद्या + अर्जन = विद्यार्जन

द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि

द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह

सुधा + अंशु = सुधांशु

निशा + अंत = निशांत

द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश

पुरा + अवशेष = पुरावशेष

महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार

कारा + आवास = कारावास

कृपा + आकांशी = कृपाकांशी

क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

चिंता + आतुर = चिंतातुर

दया + आनंद = दयानंद

द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव

निशा + आनन = निशानन

प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

प्रेरणा +आस्पद = प्रेरणास्पद

भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध

महा + आशय = महाशय

रचना + आत्मक = रचनात्मक

वार्ता + आलाप = वार्तालाप

श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ /ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत

अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय

अति + इव = अतीव

अ+ ऊ = ओ

अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिनी

नव + ऊढा = नवोढा

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

आ + ऊ = ओ

गंगा + उर्मि = गंगोर्मि

महा + ऊर्जा = महोर्जा

अ /आ + ऋ = अर्

कण्व+ऋषि = कण्वर्षी ग्रीष्म+ ऋतु = ग्रीष्मर्तु

देव + ऋषि = देवर्षि ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

राजन् + ऋषि = राजर्षि शीत + ऋतु = शीतर्तु

आ +ऋ = अर्

महा + ऋषि = महर्षि वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

3. वृद्धि स्वर संधि =

अ/आ + ए / ऐ = ऐ
अ /आ +ओ / औ = औ

नियम = (1) यदि अ / आ के बाद ए / ऐ आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ ' हो जाता है |

नियम = (2) यदि अ/ आ के बाद ओ / औ आए तो दोनों के स्थान पर 'औ ' हो जाता है |

अ / आ+ए / ऐ = ऐ

अ +ए = ऐ

एक + एक = एकैक

धन + एषणा = धनैषणा

धन + एषी = धनैषी

पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा

प्रिय + एषी = प्रियैषी

लोक + एषणा = लोकैषणा

वित्त + एषणा = वित्तैषणा

शुभ +एषी = शुभैषी

हित + एषी = हितैषी

आ + ए = ऐ

तथा + एव = तथैव

वसुधा +एव = वसुधैव

सदा + एव = सदैव

अ +ऐ = ऐ

मत + ऐक्य = मतैक्य

विचार + एक्य = विचारैक्य

विश्व + ऐक्य = विश्वैक्य

स्व + ऐच्छिक = स्वैच्छिक

आ + ऐ = ऐ

महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ / आ + ओ / औ = औ

अ + आ = औ

अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ

जल + ओक = जलौक

जल + ओघ = जलौघ

दंत + ओष्ठ्य = दंतोष्ठ्य

परम + ओजस्वी= परमौजस्वी

अ+ औ = औ

अक्ष +ऊहिनी = अक्षौहिनी

जल + औषध = जलौषधि

वन + औषधि = वनौषधि

परम + औषधि = परमौषधि

मंत्र + औषधि = मंत्रौषधि

आ +ओ = औ

महा + ओज = महौज

आ + औ= औ

महा + औषध = महौषध

महा + औषधि = महौषधि

यण् स्वर संधि : -

इ/ई + असमान स्वर =य्
उ /ऊ + असमान स्वर =व्
ऋ + असमान स्वर = र्

नियम : - यदि इ/ ई, उ /ऊ , ऋ के बाद असमान स्वर आए तो इ / ई के स्थान पर 'य्' उ / ऊ के स्थान पर ' व्' तथा ऋ के स्थान ' र' हो जाता है|

इ + अ = य

अति + अंत = अत्यंत

अति + अधिक = अत्यधिक

अति + अल्प = अत्यल्प

अधि + अधीन = अध्यधीन

अधि + अयन = अध्ययन

अधि + अक्षर = अध्यक्षर

अधि + अक्ष = अध्यक्ष

अभि + अंतर = अभ्यंतर

अभि + अर्थना = अभ्यर्थना

अभि + अर्थी = अभ्यर्थी

आदि + अंत = आद्यंत

गति + अनुसार = गत्यनुसार

गति + अवरोध = गत्यवरोध

ज्ञाति + अभिमान = ज्ञत्यभिमान

त्रि + अंबक = त्र्यंबक

परि + अंक = पर्यंक

परि + अंत = पर्यंत

परि +अटन = पर्यटन

परि + अवसान = पर्यवसान

परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक

परि + अवेक्षण = पर्यवेक्षण

प्रति + अंतर = प्रत्यंतर

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष

प्रति + अपकार = प्रत्यपकार

प्रति + अय = प्रत्यय

प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण

यदि + अपि = यद्अपि

रीती + अनुसार = रीत्यनुसार

वि + अंजन = व्यंजन

वि + अक्त = व्यक्त

वि + अग्र = व्यग्र

वि + अभिचार = व्यभिचार

वि + अय = व्यय

वि + अर्थ = व्यर्थ

वि + अवहार = व्यवहार

वि + अष्टि = व्यष्टि

वि + असन = व्यसन

वि + अस्त = व्यस्त

इ + आ = या

अग्नि + आशय = अग्न्याशय

अति + आचार = अत्याचार

अति + आवश्यक = अत्यावश्यक

अधि + आपक = अध्यापक

अधि + आदेश = अध्यादेश

अधि + आत्म = अध्यात्म

अधि + आय = अध्याय

अभि + आगत = अभ्यागत

अभि + आस = अभ्यास

इति + आदि = इत्यादि

नि + आय = न्याय

नि + आस = न्यास

परि + आय = पर्याय

परि + आवरण = पर्यावरण

प्रति + आभूति = प्रत्याभूति

प्रति + आवर्तन = प्रत्यावर्तन

वि + आकुल = व्याकुल

वि + आख्यान = व्याख्यान

वि + आघात = व्याघात

वि + आपत = व्याप्त

वि + आयाम = व्यायाम

वि + आवर्तन = व्यावर्तन

वि + आस = व्यास

इ + उ = यु

अति + उक्ति = अत्युक्ति

अति + उत्तम = अत्युत्तम

अति + उष्ण = अत्युष्ण

अभि + उत्थान = अभ्युत्थान

अभि + उदय = अभ्युदय

आदि + उपांत = आद्युपांत

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

परि + उषण = पर्युषण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर

प्रति + उत्पन्न = प्रत्युत्पन्न

प्रति + उपकार =प्रत्युपकार

इ + ऊ = यू

नि + ऊन = न्यून

प्रति + ऊष = प्रत्यूष

प्रति + ऊह = प्रत्यूह (बाधा)

वि + ऊह (विचार) = व्यूह

इ + ए = ये

प्रति + एक = प्रत्येक

ई + अ = य

देवी + अर्पण = देव्यर्पण

नदी + अर्पण = नद्यर्पण

ई + आ = या

नदी + आमुख = नद्यामुख

मही + आधार = मध्याधार

सखी + आगमन = सख्यागमन

ई + उ = यु

नारी + उद्धार = नार्युद्धार

नारी + उचित = नार्युचित

स्त्री + उचित = स्त्युचित

स्त्री + उपयोगी = स्त्युपयोगी

ई + ऐ = यै

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

उ + अ = व

अनु +अय = अन्वय

तनु + अंगी = तन्वंगी

परमाणु + अस्त्र = परमाण्वस्त्र

मधु + अरि = मध्वरि

मनु + अंतर = मन्वंतर

सु + अल्प = स्वल्प

सु + अस्ति = स्वस्ति

उ + आ = वा

गुरु + आदेश = गुर्वादेश

मधु + आचार्य = मध्वाचार्य

साधु + आचरण = सध्वाचरण

साधु + आचार = साध्वाचार

सु + आगत = स्वागत

उ + इ = वि

अनु + इष्ट = अन्विष्ट

अनु + इति = अन्विति

धातु + इक = धात्विक

उ + ई = वी

अनु + ईक्षण = अन्वीक्षण

अनु + ईक्षा = अन्वीक्षा

उ + ए = वे

अनु + एषण = अन्वेषण

अनु + एषक = अन्वेषक

उ + ओ = वो

लघु + ओष्ठ = लघ्वोष्ठ

ऊ + अ = व

वधू + अर्थ = वध्वर्थ

ऊ + आ = वा

वधू + आगमन = वध्वागमन

ऋ + असमान स्वर = र् + अन्य स्वर

ऋ+ अ = र

पितृ + अनुमति = पित्रनुमति

ऋ + आ = रा

पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

पितृ + आदेश = पित्रादेश

मातृ + आनंद = मात्रान्नद

मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा

ऋ + इ = रि

पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

मातृ + उपयोगी = मात्रुपयोगी

ऋ + ए = रे

पितृ + एषणा = पित्रेषणा

मातृ + एषणा = मात्रेषणा

पुत्र + एषणा = पुत्रेषणा

5. <u>अयादि स्वर संधि</u> : -

ए / ऐ = अय् / आय्

ओ / औ = अव् / आव्

<u>नियम</u> : - यदि ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आए तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' तथा 'ऐ' के स्थान पर 'अय्' तथा ओ के स्थान पर 'अव्' व 'औ' के स्थान पर 'आव्' हो जाता है।

<u>ए + असमान स्वर = आय् + अन्य स्वर</u>

<u>ए+ अ = अय</u>

चे + अन = चयन

ने + अन = नयन

शे + अन = शयन

संचे + अ = संचय

<u>ऐ + अ = आय</u>

गै + अक = गायक

गै + अन = गायन

नै + अक = नायक

नै + इका = नायिका

दै + इनी = दायिनी

दै + अक = दायक

विनै + अक = विनायक

शै + अक = शायक

<u>ओ + अ = आव</u>

ओ + अ = अवि

ओ + इ = अवी

गो + अक्षि / अक्ष = गवाक्ष

गो + ईश = गवीश

गो + य = गव्य

पो + अन = पवन

भो + अन = भवन

हो + अन = हवन

<u>औ + अ = आव</u>

पौ + अन = पावन

भौ + अ = भाव

भौ + अक = भावक

भौ + अना = भावना

शौ + अक = शावक

<u>औ + इ = आवि</u>

शौ + अ=इक = शाविक

<u>औ + उ = आवु</u>

भौ + उक = भावुक

(2). <u>व्यंजन संधि</u>

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम : - यदि किसी अघोष व्यंजन(वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण) के बाद कोई घोष व्यंजन (वर्ग का तीसरा , चौथा , पांचवा , वर्ण तथा य ,र, ल,व ,ह (अंतःस्थ वर्ण) या कोई स्वर आये तो वर्ग का पहला वर्ण , तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

जैसे : - क् → ग्

च् → ज्

ट् + घोष वर्ण → ड्

त् → द्

प् → ब

षट् + आनन = षडानन

षट् + दर्शन = षड्यंत्र

उदाहरण :-

दिक् + अम्बर = दिगंबर

दिक् + अंत = दिगंत

दृक + अंचल = दृग्गचल

वाक् + ईश = वागीश

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

दिक् +गज = दिग्गज

दिक् + ज्ञान = दिग्ज्ञान

वाक् + जाल = वाग्जाल

वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता

वाक् + दान = वाग्दान

चित् + रूप = चिद्रूप

सत् +रूप = सद्रूप

अध्याय – 4

समास एवं समास – विग्रह

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते हैं।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)**-समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते हैं।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल -	गंगा का जल
गंगा	जल	गंगा जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास 6 प्रकार के होते हैं

समास के प्रकार Types Of Compound

1. तत्पुरुष समास
2. कर्मधारय समास
3. अव्ययीभाव समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
2. करण तत्पुरुष (तृतीय तत्पुरुष) (से, के द्वारा)
3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) से (अलग होने के अर्थ से)
5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष) (का, की, के)
6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में,पर)

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत,

समस्त पद		विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक
अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
यथोचित	-	उचित रुप में / जो उचित हो
यथा विधि	-	विधि के अनुसार
यथामति	-	मति के अनुसार
यथाशक्ति	-	शक्ति के अनुसार
यथानियम	-	नियम के अनुसार
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
यथासमय	-	समय के अनुसार
यथासामर्थ	-	सामर्थ के अनुसार
यथाक्रम	-	क्रम के अनुसार
प्रतिकूल	-	इच्छा के विरुद्ध
प्रतिमाह	-	प्रत्येक -माह
प्रति दिन	-	प्रत्येक - दिन
भरपेट	-	पेट भर के
हाथों हाथ	-	हाथ ही हाथ में / (एक हाथ से दूसरे हाथ)
परम्परागत	-	परम्परा के अनुसार
थल - थल	-	प्रत्येक स्थान पर
बोटी – बोटी	-	प्रत्येक बोटी
नभ –नभ	-	पूरे नभ में
रंग - रंग	-	प्रत्येक रंग के
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्प –चुप्प	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो / प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
अलग-अलग	-	बिल्कुल अलग
मनचाहे	-	मन के अनुसार
छोटे – छोटे	-	बहुत छोटे
भरे - पूरे	-	पूरा भरा हुआ
जानलेवा	-	जान लेने वाली
दूरबीन	-	दूर देखने वाली
सहपाठी	-	साथ पढ़ने वाला / वाली
खुला – खुला	-	बहुत खुला
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक

नोटः-

हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद		**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन
वाक्यहीन	-	वाक्य से हीन
भाषाहीन	-	भाषा से हीन
संगीहीन	-	संगी से हीन
पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, नीचे गिरा हुआ)
पदच्युत	-	पद से च्युत
देशनिकाला	-	देश से निकाला
ऋणमुक्त	-	ऋण से मुक्त
पापमुक्त	-	पाप से मुक्त का
जीवनमुक्त	-	जीवन से मुक्त
पदमुक्त	-	पद से मुक्त
अभियोगमुक्त	-	अभियोग से मुक्त
कर्तव्य विमुख	-	कर्तव्य से विमुख (विमुख-वंचित)
आशातीत	-	आशा से अतीत
धर्मभ्रष्ट	-	धर्म से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, आचरणहीन, नीचे गिरा हुआ)
धर्म विमुख	-	धर्म से विमुख
बन्धन मुक्त	-	बन्धन से मुक्त
पापोद्धार	-	पाप से उद्धार
अपराधमुक्त	-	अपराध से मुक्त
रोगमुक्त	-	रोग से मुक्त
जातिभ्रष्ट	-	जाति से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा, आचरणहीन)
आकाशवाणी	-	आकाश से वाणी
जलरिक्त	-	जल से रिक्त
गर्वशून्य	-	गर्व से शून्य
धर्मविरत	-	धर्म से विरत
त्रुटिहीन	-	त्रुटि से हीन
वीरविहीन	-	वीर से हीन

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :-

जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती है, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास होता है।

जैसे :-

समस्त पद	-	**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञ	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार
देवरक्षा	-	देव की रक्षा
शिवालय	-	शिव का आलय (आलय = घर)
गृहस्वामी	-	गृह का स्वामी
विद्यासागर	-	विद्या का सागर
लोकतंत्र	-	लोगों का तंत्र
ईश्वरभक्त	-	ईश्वर का भक्त
राजदूत	-	राजा का दूत
राजसभा	-	राजा की सभा
लखपति	-	लाखों (रुपयों) का पति
जलधारा	-	जल की धारा
क्षमादान	-	क्षमा का दान
मताधिकार	-	मत का अधिकार
भारत रत्न	-	भारत का रत्न
मृत्युदंड़	-	मृत्यु का दंड़
स्वतन्त्र	-	स्व का तन्त्र
देव मूर्ति	-	देव की मूर्ति
गंगा – तट	-	गंगा का तट
अमृतधारा	-	अमृत की धारा

गणपति	-	गण का पति (गणेश)
राजकन्या	-	राजा की कन्या
गंगाजल	-	गंगा का जल
राजपुरुष	-	राजा का पुरुष
घुड़दौड़	-	घोड़ों की दौड़
राजरानी	-	राजा की रानी
पर्णशाला	-	पर्ण की शाला
राष्ट्रपति	-	राष्ट्र का पति
लोकसभा	-	लोगों की सभा
सेनाध्यक्ष	-	सेना का अध्यक्ष
देशप्रेम	-	देश का प्रेम
मातृशक्ति	-	माता की शक्ति
आत्मसम्मान	-	आत्मा का सम्मान
जलापूर्ति	-	जल की आपूर्ति
स्वलेख	-	स्व का लेख
आत्मरक्षा	-	आत्मा की रक्षा
प्रजापति	-	प्रजा का पति
सेनापति	-	सेना का पति
श्रमदान	-	श्रम का दान
देशसेवक	-	देश का सेवक
उद्योगपति	-	उद्योग का पति
पशुपति	-	पशुओं का पति
राजनीति	-	राजा की नीति
देशोद्धार	-	देश का उद्धार
आनंद श्रम	-	आनन्द काआश्रम
गुरुसेवा	-	गुरु की सेवा
ग्रामोद्धार	-	ग्राम का उद्धार
चंद्रोदय	-	चंद्र का उदय
दया सागर	-	दया का सागर
पुस्तकालय	-	पुस्तक का आलय (आलय = घर)
विद्यालय	-	विद्या का आलय (आलय = घर)

रामायण	-	राम का अयन
मोरपंख	-	मोर का पंख
दावानल	-	जंगल की आग
ब्रिटिशराज	-	ब्रिटिश का राज
लौह श्रंखला	-	लोहे की श्रंखला
रणभेरी	-	रण की भेरी
हिमपात	-	हिम का पात अर्थात् (बर्फ) का गिरना
ब्याहमंड़प	-	ब्याह के मंड़प
वनस्थली	-	वन का स्थल
प्रेम कहानी	-	प्रेम की कहानी
भारतवासियों	-	भारत के वासियों
संध्या समय	-	संध्या के समय
विचार विनिमय	-	विचारों का विनिमय
प्रेमलिंगन	-	प्रेम का आलिंगन
अभिनंदनपत्र	-	अभिनंदन का पत्र
जोर अजमाई	-	जोर (ताकत) की अजमाई
दोपहर	-	दो पहरों का समाहर
समुद्रतल	-	समुद्र का तल
हिमालय	-	हिम (बर्फ) का आलय (आलय = घर)
जीवनशैली	-	जीवन की शैली
जीवनदर्शन	-	जीवन का दर्शन
सौंदर्यप्रसाधनों	-	सौंदर्य के प्रसाधनों
प्रतिष्ठा चिन्ह	-	प्रतिष्ठा के चिन्ह
मनचाहा	-	मन के अनुसार
लक्ष्य भ्रम	-	लक्ष्य का भ्रम
उपभोक्तावाद दर्शन	-	उपभोक्तावाद का दर्शन
व्यक्तिकेंद्रता	-	व्यक्ति की केंद्रता
वनपक्षी	-	वन का पक्षी
घटनाक्रम	-	घटनाओं का क्रम
जीवनसाथी	-	जीवन का साथी

अध्याय – 7

मुहावरे

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- अभ्यास करना या बातचीत "लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह शुद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रुढ़ हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ के बजाए सांकेतिक अर्थ देता हो।"

"मुहावरा" कहलाता है, जैसे खिचड़ी पकाना, लाठी खाना, नाम धरना आदि ।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली उक्तियाँ' तथा कहावत का अर्थ है 'कही जाने वाली बात।'

ऐसा वाक्य जो चमत्कृत ढंग से संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, सशक्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/ कहावत कहलाती है।

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेषताए होती हैं :

1. लोकोक्तियाँ / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देते हैं।
2. लोकोक्तियाँ / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यावान अनुभव छिपे रहते हैं, इसलिये इन्हें ज्ञान की पितरियाँ कहा जाता है।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक व्यक्ति से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की धरोहरें' होती हैं ।

अपना उल्लू सीधा करना	=	स्वार्थ सिद्ध करना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना	=	सबसे अलग रहना
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना	=	अपनी प्रशंसा स्वयं करना
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	=	स्वयं को हाँनि पहुँचाना
अपने पैरों पर खड़े होना	=	आत्मनिर्भर होना
अक्ल पर पत्थर पड़ना	=	बुद्धि भ्रष्ट होना
अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना	=	मूर्खता प्रदर्शित करना
अंगूठा दिखाना	=	कोई वस्तु देने या काम करने से इंकार करना
अँधे की लकड़ी होना	=	एक मात्र सहारा
अच्छे दिन आना	=	भाग्य खुलना
अंग-अंग फूले न समाना	=	बहुत खुशी होना
अंगारों पर पैर रखना	=	साहसपूर्ण खतरे में उतरना
आँख का तारा होना	=	बहुत प्यारा
आँखें बिछाना	=	अत्यन्त प्रेम पूर्वक स्वागत करना
आँखें खुलना	=	वास्तविकता का बोध होना
आँखों से गिरना	=	आदर कम होना
आँखों में धूल झोंकना	=	धोखा देना
आँख दिखाना	=	क्रोध करना/ड़राना
आटे दाल का भाव मालूम होना	=	बड़ी कठिनाई में पड़ना
आग बबूला होना	=	बहुत गुस्सा होना
आग से खेलना	=	जानबूझ कर मुसीबत मोल-लेना
आग में घी डालना	=	क्रोध भड़काना
आँच न आने देना	=	हानि या कष्ट न होने देना
आड़े हाथों लेना	=	खरी-खरी सुनाना
आनाकानी करना	=	टालमटोल करना
आँचल पसारना	=	याचना करना

आस्तीन का साँप होना	=	कपटी मित्र
आकाश के तारे तोड़ना	=	असंभव कार्य करना
आसमान से बातें करना	=	बहुत ऊँचा होना
आकाश सिर पर उठाना	=	बहुत शोर करना
आकाश पाताल एक करना	=	कठिन प्रयत्न करना
आँख का काँटा होना	=	बुरा लगना
आँसू पीकर रह जाना	=	भीतर ही भीतर दुःखी होना
आठ-आठ आँसू गिराना	=	पश्चाताप करना
इधर-उधर की हाँकना	=	बेमतलब की बातें करना
इतिश्री होना	=	समाप्त होना
इस हाथ लेना उस हाथ देना	=	हिसाब-किताब साफ करना
ईद का चाँद होना	=	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
ईंट से ईंट बजाना	=	नष्ट कर देना
ईंट का जवाब पत्थर से देना	=	कड़ाई से पेश आना
आँसू पोंछना	=	सान्त्वना देना
आँखें तरेरना	=	क्रोध से देखना
आकाश टूट पड़ना	=	अचानक विपत्ति आना
आग लगने पर कुआँ खोदना	=	ऐन मौके पर उपाय करना
उंगली उठाना	=	निन्दा करना/लाँछन लगाना
उन्नीस-बीस का फर्क होना	=	मामूली फर्क होना
उल्टी गंगा बहाना	=	प्रचलन के विपरीत कार्य करना

उड़ती चिड़िया पहचानना	=	बहुत अनुभवी होना
उल्लू बनाना	=	मूर्ख बनाना
उँगली पर नचाना	=	वश में करना
उल्लू सीधा करना	=	अपना स्वार्थ देखना
एक और एक ग्यारह होना	=	एकता में शक्ति होना
एक लाठी से हाँकना	=	सबसे एक जैसा व्यवहार करना
एक आँख से देखना	=	समदृष्टि होना/भेदभाव न करना
एडी चोटी का जोर लगाना	=	बहुत कोशिश करना
एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होना	=	एक प्रवृत्ति के होना
ओखली में सिर देना	=	जानबूझ कर विपत्ति में फँसना
ओढ़ लेना	=	जिम्मेदारी लेना
और का और होना	=	एकदम बदल जाना
औने-पौने बेचना	=	हानि उठाकर बेचना
औघट घाट चलना	=	सही रास्ते पर न चलना
कंचन बरसना	=	चारों ओर खूब धन मिलना
काट खाना	=	सूनेपन का अनुभव
किस्मत ठोकना	=	भाग्य को कोसना
कंठ का हार होना	=	प्रिय बनना
काम में हाथ डालना	=	काम शुरू करना
कूप मण्डूक होना	=	अल्पज्ञ होना
कुएँ में भाँग पड़ना	=	सब की बुद्धि मारी जाना

मुट्ठी गर्म करना	=	रिश्वत देना, लेना
मुँह की खाना	=	हार जाना/हार मानना
मक्खियाँ मारना	=	बेकार भटकना/बैठना
मक्खीचूस होना	=	बहुत कंजूस होना
मुँह पर हवाइयाँ उड़ना	=	चेहरा फक पड़ जाना
मन मसोस कर रह जाना	=	इच्छा को रोकना
मुँह काला करना	=	कलंकित होना
मुँह की खाना	=	बातों में हारना/अपमानित होना
मुँह तोड़ जवाब देना	=	कठोर शब्दों में कहना
मन मारना	=	उदास होना/इच्छाओं पर नियंत्रण

अध्याय – 8

लोकोक्तियाँ एवं कहावतें

अपना रख, पराया चख	-	अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
अपनी करनी पार उतरनी	-	स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता	-	अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है।
अधजल गगरी छलकत जाए	-	ओछा आदमी अधिक इतराता है।
अंधों में काना राजा	-	मूर्खो में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना	-	अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना
अंधा पीसे कुत्ता खाय	-	मूर्खो की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं असावधानी से अयोग्य को लाभ
अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया	-	अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ चुग गई खेत नहीं
अन्धे के आगे रोवै अपने नैना खावै	-	निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की पेक्षा करना व्यर्थ है
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है	-	अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान बन जाता है।
अन्धेर नगरी चौपट राजा	-	शासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ ना।
अन्धा क्या चाहे दो आँखें	-	बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना।
अक्ल बड़ी या भैंस	-	शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
अपना हाथ जगन्नाथ	-	अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है।

अध्याय – 12

पर्यायवाची शब्द

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं । जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं । हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं । हिन्दी में तद्भव पर्यायवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं -

		(अ)
शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड ।
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर ।
अनी	-	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर ।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन ।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग ।
अंकुर	-	अँखुआ, कोपल,कल्ला,नवोद्भिद/
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल ।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा ।
शब्द	-	**पर्याय**
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर ।
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना ।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद-पट, होंठ ।
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ ।
अनल	-	'अग्नि' ।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य ।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत् ।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया ।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच ।
अपना	-	निज, निजी, व्यक्तिगत ।
अपर्णा	-	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	-	तिरस्कार, अनादर, निरादर ।
अप्सरा	-	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या ।
अबला	-	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	-	निर्भय, निर्भीक, निडर, साहसी ।
अभिप्राय	-	तात्पर्य, आशय, मंतव्य ।
अँगुली	-	आँगुलिका , अँगुली , उँगली , दधिती , शक्वरी ।
अँगूठी	-	अंगुली , अंगुलिका , अंगुलीय , छल्ला , छाप , मुँदरी , मुद्रिका ।
अंकक	-	आमूल्यक , मूल्य – निरूपक , मूल्यांकक , मूल्यांकनकर्ता ।
अंकुर	-	कलिका , कोपल , नवपल्लव , अँखुआ , अंगुसा ।
अंगभू	-	अंगज , अंगभूत , आत्मज , तनय , धेवता , नंदन नकुल , सुअन , सुत।

अन्तरिक्ष	-	आकाश , उच्चाकाश , खमध्य , महाकाश , महाव्योम ।
अंतर्धान	-	अदृश्य , ओझल , गायब , छूमंतर , तिरोभूत , तिरोहित , लुप्त ।
अंदु	-	घुंघुरू , झाँझ , नूपुर , पाजेब , पादांगद , पायल , बंधन , बेडी ।
अंधकार	-	तम , तिमिर , अँधियारा , अँधेरा , रात , तमिस्र ।
अंधा	-	चक्षुहीन , दृष्टिहीन , नेत्रहीन
अंश	-	अंग , अवयव , उद्धारण , घटक , चित्रांश , शरीर , सोपान , हिस्सा ।
अकड़	-	अनम्य , अंहकार , घमंड , दंभ , दर्प , धृष्टता , हठ ।
अकस्मात्	-	अचानक , एकाएक , सहसा
अकाट्य	-	अखंडनीय , अदृश्य , अनुल्लंघनीय , अभंज्य , स्वयंसिद्ध ।
अकिंचन	-	दरिद्र , निर्धन , अगतिक , अनुपाय , असहाय , कंगाल , गरीब, अक्षकीलक , कीली , धुरा , धुरी ।
अक्षत	-	अनुल्लंघित , अभंजित , अविभक्त , कौमार्यवान ।
अक्षय	-	अनंत , अमर , शाश्वत , अपरिवर्तनीय , सनातन ।
अक्षुण्ण	-	अनष्ट , अभन्जित , अमर , अविकृत , अविभक्त , पवित्र ।
अगाध	-	अमित , असीम , निस्सीम , अतुल , अकूत , अगणनीय ।
अग्नि	-	अनल , अरुण , अशनि , आँच , आग , कृशानु , जातवेद , ज्वाला , दहन , धनजंय , पवि , पावक , रोहिताश्व , वहनि , वायुसुख , वैश्वानर , शिखी , समिध , छूतभुक , हुतवहा , हुताशन ।
अग्राह्य	-	अपाच्य , निषिद्ध , अनाहार्य , अस्वीकार्य ।
अचिर	-	अल्पजीवी , क्षणभंगुर , क्षणिक ।
अचल	-	अटल , अडिग , अवहनीय , अविचल , दृढ , निश्चल , स्थावर , स्थिर ।
अच्युत	-	अटल , अनष्ट , अमर , ईश्वर , विष्णु ।
अजीब	-	अद्भुत , अनोखा , विचित्र , विलक्षण ।
अज्ञ	-	अज्ञानी , नासमझ , मंदधी , मूढ , मुर्ख ।
अज़	-	दुःख , पीड़ा , मातम , शोक , अबोध ।
अतिथि	-	अभ्यागत , आगंतुक , आगत , गृहागत , पाहुन , मेहमान ।
अतुल	-	अनुपम , अद्वितीय , बेजजीर , बेजोड़ , बेमिसाल ।
अत्याचार	-	अपकार , उत्पात , जुल्म , नृशंसता , अन्याय ।
अथ	-	आदि , आरम्भ , प्रारंभ ।
अधर	-	ओठ , ओष्ठ , रदपुट , लब ।
अधर्मी	-	कुत्सित , क्षुद्र , घटिया , निकृष्ट , नीच , पतित ।
अधिकार	-	अर्हता , आधिपत्य , कब्जा , दावा , स्वामित्व , हक ।
अधीन	-	अवलंबित , आश्रित , निर्भर , परवश , मातहत , वशीभूत ।
अधीर	-	आकुल , आतुर , उद्विग्न , विकल , व्यग्र ।
अनाथ	-	दीन , नाथहीन , निराश्रित , बेसहारा , यतीम ।
अनार	-	दाड़िम , रामबीज , शुकप्रिय , शुकोदन ।
अनिवार्य	-	अटल , अपरिहार्य , बाध्यकर
अनी	-	कण , कुशाग्र , छोर , धार , नोक ।

अध्याय – 15

पल्लवन

भाव पल्लवन का अर्थ है- 'किसी भाव का विस्तार करना'। इसमें किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार की आवश्यकता तभी होती है, जब मूल भाव संक्षिप्त, सघन या जटिल हो। भाषा के प्रयोग में कई बार ऐसी स्थितियां आती है। जब हमें किसी उक्ति में निहित भावों को स्पष्ट करना पड़ता है। इसी को भाव-पल्लवन कहते हैं ।

पल्लवन के कुछ नियम –

पल्लवन के लिए मूल अवतरण के उक्ति, वाक्य, सूक्ति, लोकोक्ति तथा कहावत को ध्यानपूर्वक पढ़े ताकि मूल के सम्पूर्ण भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए ।

मूल विचार अथवा भाव के नीचे दबे अन्य विचारों को समझने का प्रयत्न करें.

- प्रधान और अप्रधान विचारों को समझ लेने के बाद एक-एक कर सभी स्थापित विचारों को एक-एक अनुच्छेद में लिखना आरंभ कीजिए ताकि कोई भी भाव तथा विचार छूटने न पाए ।
- अर्थ तथा विचार का विस्तार करते समय उसकी दृढ़ता में जहाँ-तहाँ ऊपर से कुछ उदाहरण और वास्तविक घटना भी दिये जा सकते हैं ।
- पल्लवन के लेखन में प्रसंग के विरुद्ध बातों का अनावश्यक विस्तार या वर्णन बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए ।
- पल्लवन में लेखक को प्रधान और अप्रधान भाव या विचार की टीका – टिप्पणी और विवेचना नहीं करनी चाहिए। इसमें मूल लेखक के मनोभावों का ही विस्तार और तत्वसंधान होना चाहिए ।
- भाव और भाषा की प्रकाशन में पूरी सरलता, मौलिकता और स्पष्टता होनी चाहिए एवं वाक्य छोटे-छोटे और भाषा अत्यन्त सरल होनी चाहिए।
- पल्लवन की रचना हर परिस्थिति में अन्यपुरुष में होना चाहिए।
- पल्लवन **व्यास शैली** की होनी चाहिए ना की **समास शैली** में अर्थात इसमें बातों को विस्तार से लिखने का अभ्यास किया जाना चाहिए ।

शैली किसे कहते हैं ?

विचारों तथा भावों का उचित संग्रह कर उस विषय की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण प्रस्तुत करना ही शैली कहलाता है।

- **व्यास शैली** – व्यास शैली में पहले भाव को विस्तार से लिखा जाता है तथा अंत में उसको सूत्र रूप में संग्रह कर दिया जाता है। सरल भाषा में कहे तो किसी प्रशिक्षक के भांति विस्तारपूर्वक बात समझाई जाती है और पाठक के सामने प्रस्तुत किया जाता है।
- **समास शैली**– यह शैली में सहज, कठिन, दुरूह, संधि व समास पदों से सम्मिलित भाषा का प्रयोग किया जाता है, मिश्र वाक्यों से युक्त जटिल भाषा में पहले महत्त्वपूर्ण व सूत्र रूप में बात कहकर उसका विस्तार किया जाता है।

पल्लवन के कुछ उदाहरण

1. **मूल कथन – "हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं."**

   पल्लवन – हर एक व्यक्ति अपनी जन्मभूमि और अपने देश से उसी प्रकार स्नेह रखता है जिस प्रकार वह माता – पिता के प्रति श्रद्धा तथा स्नेह रखता है । हर एक व्यक्ति के हृदय में अपने देश के प्रति अपनापन की भावना रहती है । इसे ही देशप्रेम या देशभक्ति कहा जाता है । जो व्यक्ति अपने देश से प्रेम नहीं करता है, वह पत्थर दिल का होता है क्योंकि उसमें अपनेपन की भावना का कमी रहता है ।

2. **मूल कथन – "नर और नारी जन्मते और मरते हैं, परन्तु राष्ट्र सदा अमर रहता है."**

   पल्लवन – संसार में अगणित नर तथा नारियों का जन्म प्रत्येक क्षण होता रहता है और हर क्षण मृत्यु भी होती है । मनुष्य के साथ जीना – मरना सदा लगा रहता है। यह निश्चित है की जन्म होता है तो मृत्यु भी होगी । परंतु राष्ट्र हमेशा अमर है इसकी आत्मा भी, राष्ट्र मनुष्य की तरह जीता या मरता नहीं है । व्यक्तियों के मरने से राष्ट्र नहीं मरता, जब तक राष्ट्र की अंतरंग एकता बहुत मजबूत रहती है उसपर कोई भी बाहरी शक्ति उँगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता उसका अमरत्व बना रहता है । अतः नर-नारी के जनम– मरण पर भी राष्ट्र अमर है बल्कि राष्ट्र की जो संस्कृति और

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/dy0fu7

Online order - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083